ये=जो; **च**=तथा; **एव**=निःसन्देह; **सात्त्विकाः**=सात्त्विक; **भावाः**=भाव हैं; **राजसाः**=राजसिक; **तामसाः**=तामसिक; **च**=भी; **ये**=जो; **मत्तः**=मुझ से; **एव**=ही (हैं); **इति**=इस प्रकार; **तान्**=उन्हें; **विद्धि**=जान; **न**=नहीं; **तु**=परन्तु; **अहम्**=मैं; **तेषु**=उनमें (हूँ); **ते**=वे; **मयि**=मुझ में।

अनुवाद

जो भी सत्त्वगुण, रजोगुण अथवा तमोगुण से उत्पन्न होने वाले भाव हैं, वे सब मेरी ही शक्ति के द्वारा अभिव्यक्त होते हैं। एक दृष्टि से मैं सब कुछ हूँ, फिर भी माया के गुणों के आधीन न होने के कारण मैं पूर्ण स्वतन्त्र हूँ।।१२।।

तात्पर्य

सम्पूर्ण सांसारिक क्रियाएँ माया के तीन गुणों की आधीनता में हो रही हैं। इन मायिक गुणों के मूल होने पर भी परमेश्वर श्रीकृष्ण इनके वशवर्ती नहीं हैं। उदाहरण के लिए, राजकीय विधान के अनुसार अपराधी दण्डित किया जाता है, पर विधानकर्ता राजा पर उसका अधिकार नहीं होता। वैसे ही सत्त्व, रज और तम—माया के इन गुणों के मूल होने पर भी परमेश्वर श्रीकृष्ण माया के आधीन नहीं हैं। इसी से उन्हें 'निर्गुण' कहा जाता है, जिसका तात्पर्य यह है कि उनसे प्रकट होने पर भी ये गुण उन्हें अभिभूत नहीं कर सकते। यह श्रीभगवान् का एक विशिष्ट स्वरूप-लक्षण है।

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्
मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्।।१३।।

त्रिभिः=तीनों प्रकार के; **गुणमयैः**=गुणमय; **भावैः**=भावों से; **एभिः**=इन; **सर्वम्**=सम्पूर्ण जगत्; **इदम्**=यह; **जगत्**=संसार; **मोहितम्**=भ्रांत; **नाभिजानाति**=नहीं जानता; **माम्**=मुझे; **एभ्यः**=इनसे; **परम्**=परे; **अव्ययम्**=सनातन।

अनुवाद

सत्त्व, रज और तम—इन तीनों प्रकार के गुणों द्वारा मोहित यह सारा संसार इन गुणों से परे मुझ अविनाशी को नहीं जानता।।१३।।

तात्पर्य

सम्पूर्ण जगत् माया के त्रिविध गुणों के वशीभूत हो रहा है। इन गुणों द्वारा मोहित जीव माया से परे भगवान् श्रीकृष्ण को नहीं पहचानता। त्रिविध गुणों के आधीन होने से इस जगत् में सभी विमोहित हैं।

स्वभाव-भेद के अनुसार जीवों के नाना शरीर और मानसिक एवं शारीरिक कार्य-कलाप होते हैं। मायिक गुणों के आधीन कार्य करने वाले मनुष्यों की चार कोटियाँ हैं। विशुद्ध सत्त्वगुणी मनुष्य ब्राह्मण कहलाते हैं और रजोगुणी क्षत्रिय कोटि में आते हैं। रजोगुण और तमोगुण के मिश्रण में स्थित मनुष्य वैश्य हैं और पूर्णतया तमोगुणी मनुष्य शूद्र कहलाते हैं। इनसे भी अधम जीव पशुयोनि ग्रहण करते हैं। परन्तु ये उपाधियाँ चिरस्थायी नहीं हैं। वर्तमान में मैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि